मनभावन स्वतंत्र सावन

वी थि का ई प त्रि का

साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान को समर्पित

DOI: 10528/ZENODO.11063568

अंक 14 अगस्त 2024

WWW.VITHIKA.ORG

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

चित्रा मोहन
मुख्य सलाहकार संपादक

सुमित उपाध्याय
प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संरक्षक समिति
प्रो. विनय मिश्र
प्रो. प्रभाकर सिंह
डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
डॉ. आशुतोष तिवारी

वरिष्ठ सह संपादक
डॉ. सुधांशु लाल

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

संपादकीय समिति

डॉ अरुण कुमार सिंह
डॉ धनञ्जय शर्मा
श्री मनोज कुमार सिंह
एड. सत्यप्रकाश सिंह
श्री बृजेश गिरि
श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
अर्चिता उपाध्याय

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

सलाहकार परिषद
डॉ अखिलेश पाण्डेय
डॉ शिवमूरत यादव

प्रकाशक
उज्जवल उपाध्याय
यशिका फाउंडेशन, मऊ

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख
लेखक के अपने विचार हैं

वीथिका ई पत्रिका

अंक: 14

अगस्त, 2024

विषय सूची :

गलियों की बात 04

कांवड़ यात्रा : चित्र 05

मनभावन सावन : मनोज सिंह 06

स्वतंत्रता का अमृतकाल : नमिता राकेश 07

नामवर सिंह की सर्जनात्मक आलोचना दृष्टि : विमलेश कुमार मिश्र 09

प्रेमचंद और लेखक की चुनौतियाँ : कल और आज : सुमित उपाध्याय 11

खतलिंग ग्लेशियर ट्रैक : डॉ एस पी सती ’ 14

नाटक -किस्सा गंगा जमुनी मुहल्ले का: चित्रा मोहन 17

संगीत और शिव : वैष्णवी श्री 21

पानी में डूबने के कारण एवं बचने के उपाय : डॉ एन के शाह 22

चउधरी- चउधराइन : अनु 23

पुस्तक चर्चा : अनीता रोहालन 24

सोंधी मिट्टी : कवितायेँ 25
डॉ धनञ्जय शर्मा, शायरा बानों, वीरेंद्र जैन, डॉ जय महलवाल ‘अनजान’, नेहा खातून

कृतिका के कार्टून : कृतिका सिंह 30

Visit

WWW.VITHIKA.ORG

to download this current issue to your tablet

गलियों की बात

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

आषाढ़ श्रृतु के जाते ही मनभावन सावन का आगमन होता है, हरी-भरी प्रकृति और बारिश की बूंदें तन-मन दोनों को सराबोर कर देती हैं ।

हम भारतवासियों हेतु सबसे बड़ी प्रसन्नता का अवसर हमारा देश भी इसी पवित्र सावन में स्वतंत्र हुआ था, और संयोग देखिये सब भारत अपनी स्वतंत्रता का अमृतवर्ष मना रहा है तो इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस इसी सावन मास में ही है ।

सावन के विषय में अनेकानेक पौराणिक कथाएं भी हैं,कहते हैं इसी महीने में भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकला विष पीकर राक्षसों से देवताओं की रक्षा भी की । पार्वती ने इसी महीने में शिव को पति रुप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप की शुरुआत की थी।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण तो सावन के महत्व को अत्यन्त सार्थक रुप से वर्णित करता है के मनुष्य के भोजन की चयापचय क्रिया सूर्य पर ही निर्भर है । इस महीने में सूर्य का उगना कम होता है जिससे भोजन पचने में दिक्कत होती है । इसीलिए धार्मिक मान्यता वाले लोग भी इस महीने तमाम व्रत इत्यादि द्वारा शरीर को परिष्कृत,परिमार्जित करते हैं ।

आइए आप और हम भी इस मनभावन सावन की सार्थकता को स्वीकार करने चलें आपकी अपनी "वीथिका ई पत्रिका " में।

हर हर महादेव

कांवड़ यात्रा

सुल्तानगंज

हर हर महादेव

हर हर महादेव

हर हर महादेव

सौजन्य : श्री आदित्य वर्मा,मऊ

आ जाओ मनभावन सावन बसुंधरा के सोलह श्रृंगार

आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार ।
रूठें बादल अब बरस रहे, पड़ने लगी रिमझिम फुहार,
जड़ चेतन सब प्यासें, प्यासी प्रियतमा कर रही पुकार ,
मुंडेर पर कागा बोलते, झुरमुट से कोयल गाती मल्हार ,
घर,आंगन, उपवन और निर्जन वन में छाने लगी बहार,
आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार।
झूमते पीपल,पाकड़, बुढे वटवृक्ष, हर्षित सकल संसार ,
बरसते बादल की बूंदें तप्त धरा पर कर रही मधुर प्रहार,
ताल तलैया सरोवर इतराते,पुरवाई पवन पथ रही बुहार,
तन,मन,बदन भींगा, यौवन में घुल रहा अजब खुमार,
आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार ।
काले,भूरे , कजरारे बादलों में चल रही मिठी तकरार,
अमृतमय वर्षण से प्रकृति में आया अलौकिक निखार ,
लुक-छिप सूरज,चंदा, तारे,अंनत गगन सब रहे निहार ,
सृष्टि लग रही सुहागिन, सज धजकर और रूप संवार ,
आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार।
प्रेम विथिका,मिलन वाटिका,प्रणय डगर कर रहे गुहार,
तदीतट, तरूवर, पर्वत, पनघट करते निश्छल मनुहार,
यौवन में अद्भुत अंगड़ाई, हृदय व्याकुल और बेकरार ,
बाग़ बगीचे छोरा-छोरी झूला सब तेरे स्वागत में तैयार,
आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार।
खेत खलिहान सिवान नटखट बचपन को तेरा इंतजार,
तेरे कारण मौसम लेता करवट, कर रहा नखरें हजार,
पवन झकोरे लेते हिचकोले, दिल पर चुभती कटार,
बिरह व्यथा में घायल बिरहन मन को चीरती तलवार,
आ जाओ मनभावन सावन, बसुंधरा के सोलह श्रृंगार।

मनोज कुमार सिंह
लेखक/ साहित्यकार/ स्तम्भकार

स्वतंत्रता का अमृत काल : : एक अवलोकन

नमिता राकेश
वरिष्ठ साहित्यकार एवं उप निदेशक
गृह मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

जब से आज़ादी का अमृत काल शुरू हुआ है तभी से हर देशभक्त के मन में एक अजीब सी शक्ति, एक अनदेखी ऊर्जा, एक गुनगुनाहट, एक गर्व की अनुभूति है। मन इतना प्रफुल्लित है कि हमें स्वतंत्र हुए पचहत्तर वर्ष से भी अधिक हो गए हैं। इतने संघर्षों के बाद, इतने शहीदों की बलि देने के बाद मिली आज़ादी को हम अब तक सहेजे हुए हैं यह अपने आप मे बड़ी बात है।पर प्रश्न यह है कि सिर्फ सहेजना ही काफ़ी है या इस स्वतंत्रता की महत्ता को समझना भी ज़रूरी है ?

जब हम पूछते हैं या सोचते हैं कि आज़ादी के इन पचहत्तर वर्षों में हमने क्या खोया और क्या पाया तो यकबयक वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय श्री हरिवंश राय बच्चन जी की आत्मकथा जिसका नाम है "क्या भूलूँ क्या याद करूं" की याद आ जाती है। वास्तव में, इन वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया के साथ क्या भूलूँ क्या याद करूँ को जोड़ कर देखूँ तो सही होगा।

एक लंबा अरसा बीत चुका है हमें आज़ाद हुए। हमारी संस्कृति हमारी पहचान रही है। हमारी भाषा हमारा गौरव है। हमारी परम्पराएं हमारा आधार हैं। हमारे वेद, हमारे उपनिषद, हमारे धार्मिक ग्रन्थ हमारे लिए पूजनीय हैं।

आज़ादी से पहले हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने इन्हीं सब को बचाए रखने के लिए जीतोड़ संघर्ष किया। युद्ध लड़े गए। अनगिनत लोगों ने अपने प्राणों की आहूति दी। यह तो प्राकृतिक नियम है कि जो हमें मयस्सर नहीं होता वो हमारे लिए बेशक़ीमती होता है लेकिन वही जब हासिल हो जाता है तब हम उसका मूल्य भूल जाते हैं।

हमारे योद्धा क्या इसलिए लड़े थे कि आज़ाद होने के बाद हम सारी कुर्बानियां, सारे संघर्ष, सारे दर्द भुला दें ? अत्यंत दुख की बात तो यह है कि आज़ादी के इतने वर्षों के बाद भी हमारी हिंदी भाषा अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रही है। वो भी किससे ? अपने ही देश के लोगों से ? हमारी वेशभूषा आज भी उन्हीं की नक़ल है जिन्होंने हमें वर्षों तक ग़ुलाम रखा। हम आज भी फैशनेबल तभी कहलाते हैं जब हम पाश्चात्य पहनावे को "फॉलो" करते हैं । हमारे भारतीय परिधान केवल धार्मिक या सांस्कृतिक समारोहों तक सीमित हैं। हमारी सोच शतप्रतिशत भारतीय नहीं है।

वैसे सच कहूँ तो हम बहुत जल्दी दूसरों से प्रभावित हो जाते हैं। शायद इसके पीछे लम्बी ग़ुलामी रही है। हम अभी तो दूसरों को फॉलो कर रहे हैं जबकि लोग हमें फॉलो करते हैं। मुझे कस्तूरी वाले हिरन की याद आती है। हमें हमारी ही खूबियों का पता नहीं है। लोग हमारे वेद और पुराण पढ़ रहे हैं। उन्हें जान और समझ रहे हैं और हमारे लोग मिल्स एंड बून पढ़ रहे हैं। जितने लोकप्रिय शेक्सपियर थे उतने ही कालिदास भी थे। अगर रॉबर्ट ब्रूस और मैथिऊ अर्नाल्ड प्रसिद्ध हैं तो भारत के भृतहरि, बिहारी और हज़ारी प्रसाद द्विवेदी भी कम नहीं हैं। हमारे यहां तो साहित्यकारों की लंबी सूची है । दर्द बस इतना है इन्हें पढ़ने और समझने वाले चंद ही लोग हैं।

हम किसी भी मामले में, किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं हैं बल्कि चार कदम आगे ही हैं पर हमें ख़ुद पर ही भरोसा नहीं है।

अगर आज़ादी के पचहत्तर वर्षों में कुछ खोने की बात है तो वो यह है कि हमने आत्मविश्वास खोया है। हमें अपनी ही शक्ति का अंदाज़ा नहीं है। हमें पता ही नहीं कि हम क्या हैं ? हम वर्षों से अपने को कम आंकते आए हैं।

लेकिन, कहते हैं ना कि समय हमेशा एक सा नहीं रहता। अब जिस तरह भारत का नाम विश्व पटल पर चमक रहा है वो हम सबके लिए गर्व की बात है। हमारी प्राचीन योग शक्ति के समक्ष विश्व नतमतस्क है। आज विश्वव्यापी सम्मेलनों में भारत कहीं प्रतिनिधित्व कर रहा है तो कहीं अध्यक्षता कर रहा है। आज लाइन वहां से शुरू होती है जहां भारत खड़ा होता है।

यह पाया है हमने।

मुझे खुशी है कि हम अपने मूल की ओर लौट रहे हैं। हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक आज सर उठा कर हमें अपनी ओर बुला रहे हैं। हम अपने भारतीयता के बीज स्वरूप के ऊपर पाश्चात्य पैबंद टांक कर एक

गुमनाम, एक अनदेखी एक धराविहीन अवलम्ब को अपना सहारा मान बैठे थे। हम अपनी निजता, अपनी पहचान, अपनी अस्मिता को भूल कर पराधीनता की अभ्यस्त मानसिकता के चलते ना जाने किस ओर जा रहे थे। वसुधैव कुटुम्बकम के अपनी संस्कृतिक जड़ों से दूर होकर एकल परिवार में परिवर्तित हमारी नई पीढ़ी पारिवारिक सद्भाव, मधुरता और अपनेपन से दूर होती गई। सोशल मीडिया ने घरों से लेकर बैडरूम तक का सफर इतनी जल्दी पूरा कर लिया कि हमें पता ही नहीं चला कि हमारे बच्चे और हमारे युवा बल्कि हम खुद सोशल मीडिया के वर्चुअल तिलिस्म से आसक्त हो गए। हम अपने आसपास के लोगों को भूल कर एक यंत्र में अपनी दुनिया तलाश कर रहे हैं। हम अपने मन की बात अपने ही लोगों से साझा नहीं कर रहे मगर एक नई पहल के चलते आज हम वापस अपने और अपनों के बीच लौट रहे हैं। अब हमें पता चल चुका है कि बहुत देर अपनों से दूर नहीं रहा जा सकता। सोशल मीडिया का इस्तेमाल केवल एक टेक्नोलॉजी के रूप में ही किया जाए ना कि उसे अपने घर का हिस्सा बनाया जाए। हमारे इमोशन्स हमारे अपनों के साथ ही साझा करना, हमारे साथ रह रहे लोगों से मानसिक जुड़ाव रखना ही हमारी परंपरा रही है। मुझे खुशी है कि हम अपनी जड़ों की ओर धीरे-धीरे ही सही लेकिन लौट तो रहे हैं। यह एक अच्छी बात है।

स्वतंत्रता के इन पचहत्तर वर्षों की लंबी यात्रा में बहुत से पड़ाव और बहुत से व्यवधान रहे हैं । एक सुनियोजित षड्यंत्र के कारण बहुत कुछ खोया है हमने लेकिन अब हम जाग चुके हैं। हमें पता चल चुका है कि हमने क्या खोया है और क्यों खोया है। इन दोनों प्रश्नों के उत्तर हमने हल कर लिए हैं। इसलिए हम अपनी खोई हुई अस्मिता, अपनी पहचान, अपनी सांस्कृतिक ,सामाजिक और धार्मिक मूल्यवान सनातन संस्कृति, हमारे मूल्य , परम्परा और प्रतिष्ठा की महत्ता के प्रति निष्ठावान होते हुए वो सब पाने की ओर कदम बढ़ा चुके हैं जो कुछ हम खो चुके थे । कहते हैं कि सुबह का भूला अगर शाम को वापिस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते।

मैंने एक जगह लिखा भी है---

"मत पूछो हम कैसे हैं
हम बस अपने जैसे हैं
तुमने नमिता दुनिया में
देखे क्या हम जैसे हैं ?"

सचमुच हमारा भारत और हम भारतीय अतुलनीय हैं ।

आइए! हम प्रण लें कि हम भारत की आन बान और शान को बनाए रखेंगे। केवल सीमा के प्रहरियों की ही ज़िम्मेवारी नहीं हैं कि लहू को जमा देने वाली ठंड में,मूसलाधार बारिश में और भीषण गर्मी में अपने परिवार से दूर रह कर देश की रक्षा करें और हंसते हंसते अपनी जान न्योछावर कर दें और हम अपने अपने घरों में आराम से बैठे रहें । जितना ज़रूरी देश की सीमा पर शत्रुओं से सुरक्षा करना है उतनी ही ज़रूरी देश के भीतर के शत्रुओं से भी देश की सुरक्षा करना है।

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव में हम प्रण लें कि अब हम खोने की बात नहीं सिर्फ़ पाने की बात करेंगे । एक बात और भी वो यह कि कुछ पाने की केवल इच्छा ही नहीं करना है बल्कि इसके लिए स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी भी निभानी है। अपना कर्तव्य भी उतना ज़रूरी है जितना अधिकार जताना। अगर हम देश की सीमा पर जा कर नहीं लड़ सकते तो देश के भीतर के छिपे जयचंदों से देश की सुरक्षा में महती भूमिका निभा सकते हैं।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता के अमृत काल की कोटि कोटि बधाइयां और आगामी वर्षों के लिए शुभकामनाएं।

नामवर सिंह की सर्जनात्मक आलोचना दृष्टि

विमलेश कुमार मिश्र
आचार्य, हिन्दी विभाग,
दीद. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

गतांक से आगे :-

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में सातवें दशक के बाद कई महत्वपूर्ण कथाकार आये, जिन्होंने 'अनुभववाद' और 'भोगा हुआ यथार्थ' से आगे निकालकर हिन्दी कहानी को सार्थक विस्तार दिया। नामवर सिंह ने इस पीढ़ी का भी नोटिस लिया और उदय प्रकाश, असगर वजाहत, संजीव, शिवमूर्ति, मधुसूदन, आनंद, मृणाल पाण्डेय, शशांक से लेकर देवेन्द्र तक की महत्यपूर्ण कहानियों पर बेबाक टिप्पणी की। उन्होंने इस पीढ़ी की विचारधारा की जागरूकता और सतर्कता की तारीफ की, लेकिन सतही इकहरापन के लिए राजनीतिक कहानियों का विरोध भी किया।

मेरी हिम्मत देखिए, मेरी तबीयत देखिए,
जो सुलझ जाती है, गुत्थी फिर से उलझाता हूँ मैं ।

इन सभी के बावजूद हिन्दी के समकालीन आलोचकों ने नामवर सिंह की विफलताओं की ओर भी संकेत किया है। ऐसे आलोचकों में एक महत्वपूर्ण कवि और आलोचक अशोक वाजपेयी द्वारा गिनाये गये विफलताओं की और मैं यहाँ संकेत करना चाहता हूँ। जो निम्नवत है-

1-रुचि और दृष्टि के बीच फांक- नामवर जी में रुचि और दृष्टि में फांक है- यह फांक उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता के कारण बराबर चौड़ी होती रहती है। इ

स फाक का उन्होंने कभी एहतराम किया हो ऐसा याद नहीं आता। वाजपेयी जी ने नामवर जी के चार अतिचारों की चर्चा की है-

(1) विचारधारा का अतिरेक (2) वाचिकता (3) अवसरवादिता (4) सत्ता का आकर्षण

नामवर जी ने हिन्दी आलोचना में वाचिक परम्परा की एक तरह से शुरुआत की। कई बड़े और अच्छे लेखक में प्रभावशाली वक्ता रहे हैं पर उनमें से प्रत्येक ने अपनी बुनियादी अभिव्यक्ति लिखकर ही की। नामवर जी पहले आलोचक है जिन्होंने पिछले लगभग चार दशक लिखकर कम, बोलकर अधिक बिताए हैं ।

आठ पुस्तक भर नामवर जी से पहले किसी हिन्दी लेखक ने नहीं बोला। इसका एक दूसरा पहलू भी है नामवर जी ने अक्सर जो बोला वह कभी लिखा नहीं है। अपनी वाकशूरता और वाग्मिता से ये सारा हिन्दी अंचल दशकों से लगभग रौंदते रहे है। उसका अधिकांश लिखित में कभी नहीं आया, न आएगा इन आठ पुस्तकों में भी नहीं। राजनेताओं की तरह वे अपना बचाव, मौका आने पर, भले यह कहकर न करें कि "मैंने तो ऐसा नहीं कहा था और मेरी बात संदर्भ से काटकर देखी जा रही है।" ऐसी वाचिकता उसे रिकार्ड से बाहर रखकर कुछ ऐसा करती है जो एक साथ अनैतिक और आलोचना का अवमूल्यन है। यह एक स्तर पर आलोचना को निरे अभिमत, अफवाह या फतवे में बदलने जैसा है।

नामवर जी के यहाँ अवसर के अनुकूल कुछ कहने-करने की अब एक लम्बी परिपाटी बन गयी है। सभागोष्ठियों में ये श्रोताओं को देखकर उन्हें रिझाने की दृष्टि से कुछ कहते हैं: कभी-कभी खरी-खोटी भी सुना देते हैं । लेकिन ज्यादातर, वे अनुकूल और प्रिय बातें कहकर ही श्रोताओं की प्रशंसा जीतते है। उनका ऐसा विचलन सिर्फ अवसरवादिता के कारण होता रहा है।

नामवर जी में सत्ता के प्रति अतार्किक आकर्षण रहा है। हम में कइयों ने दिल्ली में उन्हें सत्ताधारियों के साथ मंच पर होने पर बहुत विनम्र होते देखा है। उदाहरणार्थ भवानी प्रसाद मिश्र के पैतृक गाँव में हुए एक आयोजन का है जिसमें मिश्र जी पर केन्द्रित एक आयोजन में नामवर जी गये थे और मध्यप्रदेश के तब के मुख्यमंत्री को आना था। नामवर जी ने उस अवसर पर दिये अपने संक्षिप्त भाषण में मिश्र के बारे

में कुछ नहीं कहा और मुख्यमंत्री की नाटक प्रशंसा में सारा समय लगाया। नामवर जी कई बनी बनाई संस्थाओं में जैसे साहित्य अकादमी, प्रगतिशील लेखक संघ, महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन आदि में पदासीन रहे हैं।

* अकादमी में जब तक नामवर जी किसी निर्णायक भूमिका में रहे तब तक किसी गैर प्रगतिशील को पुरस्कार या प्रोत्साहन नहीं मिल पाया।

* सोवियत संघ और यूरोप में साम्यवादी व्यवस्था के विघटन ने मार्क्सवादी विचारधारा के समक्ष गहरा संकट उपस्थित किया। इस संकट पर न तो नामवर जी ने गहराई से स्वयं विचार किया और न ही उनके नेतृत्व में लेखक संघ ने। अगर उसके रूप में थोड़ी बहुत उदारता आयी हो तो वह बदली हुई परिस्थिति के दबाव में आयी, किसी वैचारिक मंथन के कारण नहीं। इस प्रकार नामवर जी मावसंवाद में भी यथास्थिति के पोषक ही साबित हुए, सम्पादन में 'जनयुग', 'आलोचना' और 'राष्ट्रीय सहारा'। समकालीन साहित्य-दृश्य में अपनी उपस्थिति और सक्रियता के बावजूद नामवर जी ने अपने ही प्रिय लेखकों जैसे मुक्तिबोध, शमशेर, नागार्जुन, निर्मल वर्मा, रघुवीर सहाय आदि पर ऐसा कुछ नहीं लिखा है जो इन लेखकों को समझने-बूझने के लिए पढ़ना अनिवार्य लगे।इनमें से किसी पर नामवर-समझ की कोई तह कभी नहीं जम सकी।

लगभग 50 वर्षों तक नामवर सिंह अज्ञेय के विरुद्ध डटकर मोर्चा सम्भाले रहे। उन्हें अभिजात, समाज विरोधी, पश्चगामी आदि बताने में अग्रणी रहे हैं। ये अज्ञेय के विरुद्ध अधिकतर बोलते, कटुक्तियों आदि करते रहे हैं। अज्ञेय की उपस्थिति में अपने अवसरवादी चरित्र के अनुरूप, उनकी जरूरत से अधिक प्रशंसा करते थे लेकिन पीठ पीछे और अपने प्रगतिशील मंचों पर उन पर जमकर कटाक्ष और प्रहार। जैसे- फरवरी-मार्च 1987 में विवेचना के प्रगतिशील मंच पर नामवर जी ने कहा- "गद्य का पतन जिनके कारण हुआ है ये इतने गम्भीर आदमी हैं। अज्ञेय चिड़ियाघर के किसी चिम्पांजी के समान गम्भीर व मनहूस दिखायी देते हैं। अज्ञेय, निर्मल वर्मा, रमेश चन्द्र शाह जिन्हें सही गद्य तो लिखना आता नहीं पर भारी चिन्तन की बात करते हैं।"

पुनः 2011 में जब अज्ञेय जन्मशती मनायी गयी तो नामवर जी ने अज्ञेय की कविताओं का एक संचयन तैयार किया और उसकी भूमिका में लिखा- "देश-काल की दृष्टि से अज्ञेय की कविता की दुनिया अन्य हिंदी काव्यों से कहीं अधिक व्यापक है। यह आधी दुनिया के साथ-साथ लगभग आधी शताब्दी तक फैली हुई है। ध्यान से देखें तो अज्ञेय हिन्दी में प्रकृति के शीर्षस्थ चित्रकार हैं । क्या मजाल कि उनकी कविता में भूल से भी कोई फालतू शब्द आ जाय। सच तो यह है कि अज्ञेय ने अपनी अप्रतिहत सृजन-यात्रा में प्रयोग से आगे बढ़कर अपना एक नया भरा-पूरा कार्य-संसार रचा जो सभी वादों से उपर है और टिकाऊ भी ।" इसी भूमिका के समापन पर अज्ञेय चिम्पांजी के बजाय 'अमृतपुत्र' हो गये हैं।

सितम्बर 2015 से दिसम्बर 2015 के बीच का समय था, जब भारतीय शिक्षित समुदाय असहिष्णुता की आँधी में फंस गया था। लेखक सहिष्णुता के पक्ष में अपने अकादमिक पुरस्कार वापस कर रहे थे। एक-दो लेखक जो इसके मुख्य किरदार थे, पुरस्कार वापसी के पक्ष में देशव्यापी अभियान छेड़े हुए थे। अभियान में वामदलों के लेखक और उनके धुर विरोधी साथ थे। नामवर जी की यह प्रतिक्रिया कि वे लेखक अपना नाम चमकाने और सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए ऐसा कर रहे हैं अकल्पनीय थी। नामवर जी इस सब तक पहुँच गये थे कि पुरस्कार बापसी का मुख्य मुद्दा सहिष्णुता असहिष्णुत्ता नहीं है। देश का पूर्व इतिहास उनके सामने था। यदि असहिष्णुता मुद्दा होता तो यह पहले भी व्यक्त हुआ होता क्योंकि सैकड़ों घटनाएं पहले भी घटी थी। इसीलिए उन्होंने पुरस्कार वापस करने वाले लेखकों को दोषी मानते हुए बयान दिया कि इन लोगों को साहित्य अकादमी से कहना चाहिए था कि आप अपना विचार बताइये अन्यथा हम अपना पुरस्कार वापस करेंगे। लोकतंत्र का तकाजा है कि भारत के संविधान के अनुसार, कोई भी मान्य दल अगर सरकार बनाता है, चाहे हमने उसे वोट न दिया हो, या हमारी विचारधारा का न हो, तो भी यह हमारी ही सरकार है।"

दरअसल हर बड़े रचनाकार, कथाकार और आलोचक के सफलता के पीछे निश्चित रूप से कुछ मूल्य व मानदण्ड होते हैं और उन्हीं के आधार बनाकर व्यक्ति अपने लिए कोई न कोई सिद्धान्त बनाता है, जो उसको सफल बनाने में सहायक होते है।

नामवर सिंह ने अपने जीवन के तीन मार्गदर्शक सिद्धान्तों को कुछ यों सूत्रबद्ध किया है-

1- आत्मसम्मान की कीमत पर कुछ भी नहीं किया है और इसके लिए जीवन में संघर्ष तो करना ही पड़ा है, बहुत कुछ खोया भी है।

2- जीवन में ऋण ढ़ोते रहने की अनवरत चेष्टा करता रहा हूँ, अर्थात् किसी ने जिन्दगी के मोड़ पर अगर उपकार किया है तो चुपचाप यथासमय और यथासम्भव उसे लौटाने के लिए प्रयासरत रहा हूँ।

3- नये तथ्यों की रोशनी में अपना सतत् पुनरीक्षण करता रहता हूँ जिसके लिए आलोचना का पाच भी बनता रहा हूँ। मुझे कन्सिस्टेंसी अर्थात् संगति की चिन्ता नहीं रहती। वस्तुत मैं तो जड़ प्रतिबद्धता को बाजार मानता हूँ जिससे न व्यक्ति ही समृद्ध होता है और न विचारधारा अथवा व्यवस्था ही ।

प्रेमचंद और लेखक की चुनौतियाँ: कल और आज

सुमित उपाध्याय
प्रबंध संपादक, वीथिका ई पत्रिका

"एक दुनिया : समानांतर" की भूमिका में प्रसिद्ध कथाकार राजेंद्र यादव जी लिखते हैं, " कलाकार .....अपने अपने 'उस' जगत का वह नियामक है, ब्रहा और 'इस' जगत में वहां के राजदूत की हैसियत से ही रहता है..."। निश्चित ही लेखक, कवि, कलाकार, सर्जक अपनी एक दुनिया बनाते हैं, इस दुनिया को देखते हैं और यहाँ से गारा-मिट्टी ले अपनी उस दुनिया का निर्माण करते हैं । उनकी यह दुनिया उनके जाने हुए, भोगे हुए सच से बनी होती है । सत्य के इस साधना से लेखक स्वयं को साधता है । यह साधना सत्य के अपने-अपने अनुभूति पर जा समाप्त होती है । भारतीय मनीषियों ने सत्य के इस दर्शन को रहस्योद्घाटन के अंग के रूप में माना । ईशोपनिषद कहता है –"हिरण्यमयेण पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं", अर्थात सत्य का मुख सोने के बर्तन से ढका है । उसके दर्शन के लिए उस पात्र को हटाना होगा । प्रसिद्ध आलोचक डॉ नामवर सिंह जी ने अपने लेख "रहस्यवाद" में इस विषय पर गम्भीरता से चर्चा करते हुए लिखा है, "इस सत्य का दर्शन सबको सब समय नहीं होता । विशेष व्यक्ति विशेष क्षण में ही सत्य को देख सकते है। ऐसे विशेष व्यक्ति को विशेष प्रकार की दृष्टि प्राप्त होती है जिसे कभी-कभी "अंतदृष्टि" भी कहते हैं । प्राचीन काल में ऐसे सत्य द्रष्टा "ऋषि" कहलाते थे और "कवि" भी ....जिसका अर्थ होता था द्रष्टा । "

कहीं रास्ते में सोने का बर्तन रखा हो तो सामान्यजन उस बर्तन की बनावट, सुन्दरता, सोने की शुद्धता आदि पर ही विचार करेंगे पर लेखक उस सोने के बर्तन में हाथ डालेगा, वह खोजेगा उसके भीतर का रहस्य और सत्य का अन्वेषण कर सामने लायेगा । अब यहाँ लेखक या कवि का दायित्व हो जायेगा कि वह अपने जाने हुए सच को दुनिया के समक्ष उसके मूलरूप में बिना किसी डर के रखे, बहुत संभव है कि उसका समाज उसे स्वीकार न करे, पर इस भय या संकोच से लेखक को रुक नहीं जाना है उसे अपनी बात रखनी ही है ।

40 वर्षों की साहित्य साधना करने वाले कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी को जब मार्च, 1936 में सज्जाद ज़हीर साहब ने लखनऊ में होने वाले "प्रगतिशील लेखक संघ" की अध्यक्षता करने को कहा तो पहले प्रेमचन्द जी ने मना किया, उन्होंने सज्जाद ज़हीर जी को लिखे अपने पत्र में कहा कि वहां सभी राजनीतिक रंग में होंगे, आप किसी ऐसे व्यक्ति को यह जिम्मा दें, पर अंत में प्रेमचन्द जी मान गये व सम्मलेन में पहुंचे । वहां वो एक अन्य भाषण लिख कर ले गये थे, पर बोला उन्होंने कुछ और, ऐसा ही कार्य वो आर्य समाज के सम्मलेन में भी कर चुके थे, लिखे कुछ और पर अंत में अपने लिखे को नहीं पढ़ा । यही द्रष्टा होता है, वह जानता है कहाँ, कब, क्या और कितना कहना है । उस दिन प्रेमचन्द जी ने अपने दिए भाषण "साहित्य का उद्देश्य" में लेखक व लेखन से जुड़े विषयों पर खुल कर बोला । उन्होंने कहा, "साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गयी हो ।....हमने अभी-अभी जिस युग को पार किया है उसे जीवन से कोई मतलब नहीं था ।" प्रेमचन्द स्पष्ट रूप से आने वाले लेखक को संबोधित कर उसे साहित्य लेखन का मार्ग बता रहे थे, उनका इशारा मध्यकाल और उनके समय के ठीक पहले लिखे गये विषयों के जीवन के मूल बिन्दुओं को नज़रअंदाज़ कर ईश्वर या नायिका के इर्द-गिर्द रची गयी रचनाओं पर था जो जीवन के सच से पलायन का मार्ग तो हो सकती हैं पर सत्य नहीं । उन्होंने कहा कि लेखक की सौन्दर्य दृष्टि व्यापक हो जिसकी परिधि में सारी सृष्टि हो ।

आज जब हम वैश्विक फलक को इतना छोटा पाते हैं तो प्रेमचन्द का प्रलेस के सम्मलेन में दिया गया भाषण जैसे "आधुनिक लेखन कला का मैनीफिस्टो"दिखायी देता है ।

प्रेमचन्द जिस समय में लिख रहे थे वह समय ताल्लुकेदारों के अत्याचार, व राजकर्मचारियों के एक बड़े चक्र में पिसते भूखे किसान का समय था । एक लेखक के सामने ब्रिटिश साम्राज्यवाद व बड़े जमींदार दोनों थे, इनके खिलाफ जाने का दुस्साहस बहुत भारी पड़ता था । पर महात्मा गाँधी के आवाहन पर अपनी नौकरी छोड़ने वाले नवाबराय कहाँ डरने वाले थे । उन्होंने एक प्रेस खोल लिया व लगे लिखने व छापने । यह प्रेस उनके साथ अंत तक रहा जिसने प्रेमचन्द जी के ही शब्दों में आर्थिक रूप से उस समय 10-12 हज़ार रुपये की हानि उन्हें दी । पर इस आर्थिक बोझ को वह अकेले ही सहते रहे, और "हंस" तथा "जागरण" के माध्यम से उन्होंने लेखकों की एक फौज बना डाली जो अनवरत लिख रही थी । लेखन व लेखक का दर्द प्रेमचन्द अच्छी तरह से जानते थे, संपादकों व प्रकाशकों के बीच पिसते लेखक पर उनकी निगाह थी । "माधुरी" के संपादक को उन्होंने लिखा, "साहित्य की दशा ख़राब है। यदि आप पुस्तक का प्रकाशन और उसकी उचित रॉयल्टी लेना चाहें तो आपको देश में एक भी प्रकाशक न मिलेगा। जब आप रॉयल्टी मांगेंगे तो आपको उत्तर मिलेगा कि पुस्तक बिक ही नहीं रही । इसी कारण मैंने व कुछ अन्य लेखकों ने लेखन ही जिनकी जी जीविका है अपनी पुस्तकें स्वयं प्रकाशित करना आरंभ कर दिया।" शुरू से आज तक प्रकाशक जिस लेखक के लेखन से धनोपार्जन करते आये हैं, उसी लेखक व उसकी आवश्यकताओं को ही इस वर्ग ने हाशिये पर खड़ा कर दिया है । ऐसे में आज भी प्रेमचन्द लेखकों के समक्ष अपना रास्ता स्वयं बनाने की कला को सिखाते दिखायी देते हैं ।

अज्ञेय अपने लेख "उपन्यास सम्राट" में बताते हैं कि प्रेमचन्द ने कभी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं रखी, वह अपने लेखन से समाज सुधार तो कर रहे थे पर उसके बदले किसी राजनीतिक पहचान की दरकार प्रेमचन्द को न थी । प्रलेस के अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रेमचंद साहित्यकारों को सचेत करते हुए कहते हैं, "साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है, उसका दरजा इतना न गिराइये। वह देशभक्ति व राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं है, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुयी चलने वाली सच्चाई है ।" आज भी तमाम लेखक जाने-अनजाने कब किसी राजनीतिक दल के व्हाट्सएप एजेंट बन जाते हैं उन्हें स्वयं पता नहीं चलता । और उस समय ही प्रेमचन्द आने वाले समय को जैसे देख रहे थे । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी प्रेमचन्द से सीख देते हुए कहते हैं, "हमारे उपन्यासकारों को देश के वर्तमान जीवन के भीतर अपनी दृष्टि गड़ाकर देखना चाहिये; केवल राजनीतिक दलों की बातों को लेकर ही न चलना चाहिये। साहित्य को राजनीति के उपर रहना चाहिए; सदा उसके इशारों पर ही न नाचना चाहिए ।"

अपने लेख में अज्ञेय प्रेमचन्द की अंतिम बीमारी के समय रामकटोरा वाले प्रेमचन्द के निवास में उनसे हुई भेंट को याद करते हुए लिखते हैं, "....उन्होंने स्वयं मुझे बताया था कि कैसे उन्हें यह अनुभव होता है कि वास्तव में उनके विचारों का सम्मान नहीं, स्वयं उन विचारों का इस्तेमाल कर लेने की कोशिश होती है । प्रेमचन्द न ऐसे पहले प्रबुद्धचेत्ता व्यक्ति थे जिनका राजनीतिक इस्तेमाल कर जाने की कोशिश हुई, न ऐसे अंतिम व्यक्ति । आज की राजनीति की तो एक मुख्य प्रवृत्ति ही यही है कि कैसे प्रबुद्धचेत्ता वर्ग का इस्तेमाल अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कर लिया जाये !" इन बातों को ध्यान से देखने से आज हम लेखको को अपनी साधना से भटकने से बचने का मार्ग मिल सकता है और अपने मन-मष्तिष्क को अनावश्यक सूचनाओं व प्रोपेगैंडा से बचा कर अपने साहित्यकर्म में लगाने का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।

अब मैं एक नई तो नहीं पर नये रूप में सामने आने वाली चुनौती की बात करने जा रहा हूँ । आज विज्ञान बहुत आगे है । हमारी सामान्य समझ व चेतना यही कहती है कि पहले साहित्य स्वप्न देखता है, विज्ञान उस स्वप्न को सही बनाता है । AI अर्थात Artificial Intelligence यानि सूचनाओं के माध्यम से कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते हुए नये सृजन का मुक्त द्वार । आप इन्टरनेट के द्वारा किसी भी विषय पर लेख, निबंध, कविता तैयार कर सकते हैं । कहा जा रहा है कि आगे आने वाले समय में लेखन का एक नया युग सामने होगा । तो क्या लेखक के सामने अस्तित्व की रक्षा का समय आ गया है ? क्या मनुष्य से बेहतर कंप्यूटर लिख सकेगा ? क्या Artificial Intelligence लेखक को विस्थापित कर देगा ? इन प्रश्नों का उत्तर प्रेमचन्द जैसे प्रलेस के अपने संबोधन में ही दे रहे थे । 12 उपन्यास, 300 कहानियां, सैकड़ों पत्र जैसी विशाल साहित्यिक संपदा का मालिक अपने पात्रों की बनावट व भाषा को लेकर बहुत संवेदनशील था । वो जान रहे थे कि जिस प्रकार का लेखन आगे बढ़ रहा है, संभव है समाज एक दिन जबरदस्ती के रचना-शिल्प को न केवल पहचान लेगा बल्कि उसे खारिज भी कर देगा । ऐसे में उन्होंने कहा, "जो कुछ स्वाभाविक है वही सत्य है और स्वभाविकता से दूर हो कर कला अपना आनंद खो देती है।" निश्चय ही AI से "शब्दों के सुन्दर प्रयोग" के द्वारा साहित्य जैसा दीखता कुछ लिखा जा सकता है पर वह एक

सत्यान्वेषी की स्वाभाविक प्रतिक्रिया न होगी । ऐसे में जो लेखक सत्य की साधना में जुटा है उसे डरने की आवश्यकता नहीं हाँ पर सुंदर-सुंदर लिखने वाले और उसे साहित्य समझने वाले कोई नई कला सीख लें तो सही हो ।

वर्तमान लेखन की कम से कम अपने समाज में तो सबसे बड़ी कमी "लेखक के लिए स्कूल" का न होना है । मुंबई , पुणे, दिल्ली आदि प्रमुख जगहों पर रंगशालाएं व साहित्य केंद्र तो हैं पर उनका झुकाव फ़िल्मी लेखन पर अधिक है । और कम से कम प्रेमचन्द जैसा गम्भीर लेखक इस फ़िल्मी साहित्य को साहित्य तो नहीं ही मानता है ।

वर्तमान में अगर कोई लेखक आपको लेख, कविता, नाटक, निबन्ध,कहानी, व्यंग्य आदि पर न केवल लिखता बल्कि प्रयोग करता मिले तो समझिये यह केवल और केवल उसकी स्वयं की प्रतिभा है, साधना है जो अब सामने है, एक समाज के रूप में उसे शायद ही कोई सहायता मिल रही हो । प्रेमचन्द अपने समय में ही इस बात को उसकी पुरी गंभीरता से समझ गये थे । उन्होंने कहा था कि ""जब साहित्यकार बनने के लिए अनुकुलरुचि के अलावा और कोई कैद न रही जैसे महात्मा बनने के लिए किसी प्रकार की शिक्षण की आवश्यकता नहीं आध्यात्मिक उच्चता ही काफी है तो जैसे महात्मा लोग दर-दर फिरने लगे हैं वैसे ही लाखों-लाख साहित्यकार भी आ गये हैं । साहित्यकार पैदा होता है; बनाया नहीं जावा, पर यदि हम शिक्षा व जिज्ञासा से प्रकृति की इस देन को बढ़ा सके तो निश्चय ही हम साहित्य की अधिक सेवा कर पायेंगे।"

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने प्रेमचन्द जी को दिन प्रतिदिन मृत्यु के समीप आते देखा था, निराला 40 वर्ष की निरंतर साहित्य साधना का ऐसा फल देख कर ठिठक से गये । 31 जुलाई को जन्मे नवाब जीवन भर दुःख का हर रूप देखते रहे, पर एक महान साधक उससे विचलित नहीं होता वह उस पीड़ा को आमजन की पीड़ा समझ उसके निराकरण में अपनी साधना लगा देता है, और इस साधना में नवाब माँ को खोने के बाद नवाब राय बना फिर लोगों ने प्रेमचन्द बनाया तो प्रेमचन्द बन गये और 8 अक्टूबर, 1936 को अपनी साधना की महायात्रा में एकदम चुपचाप चले गये । सरोज के दुःख से कलम छोड़ चुके निराला से प्रेमचन्द का दुःख न देखा गया उन्होंने "राम की शक्तिपूजा" लिखी जो 10 अक्टूबर को छप सकी । पर साधक तो जा चूका था अपनी शक्ति नये लेखकों के हाथ में देकर ।

आज जब एक लेखक के समक्ष आने वाली चुनौतियों को देखते हैं तो मानो नवाब राय साहब सामने आ मार्ग दिखाते हैं और कहते हैं डरो मत, साहस, बुद्धि से सत्य की साधना में लग जाओ ।

खतलिंग ग्लेशियर ट्रैक:

प्रसिद्ध भू-पर्यावरणविद् एवं प्रोफेसर
पर्यावरण विभाग,
वी सी एस जी उत्तराखंड औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय
भरसर, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

हिमालय इसलिए विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण भू आकृत्तियों में से एक है क्योंकि उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के बाद हिमालय ही ऐसा क्षेत्र हैं जहां सर्वाधिक बर्फ विद्यमान है जो कि उच्च हिमालयी घाटियों में 15000 ग्लेसियरों में 12000 घन किलोमीटर तक विस्तारित है. इसी कारण इसे तीसरा ध्रुव भी कहते हैं. हिमालय एवेरेस्ट सहित विश्व की कुछ सर्वाधिक ऊँची चोटियों के लिए भी जाना जाता है जिनमे से करीब 50 से अधिक चोटियाँ 7200 मीटर से ऊँची हैं. हिमालय में तो करीब छ: करोड़ लोग निवास करते हैं परन्तु इसके संसाधनों जिनमें मुख्यतः गंगा, सिन्धु और स्वापो-ब्रम्हपुत्र तीन विशाल जलागमों में बहता जल-मिट्टी है, पर एशिया की लगभग साठ करोड़ जनसंख्या निर्भर करती है. यही नहीं इन जलागमों में सघन खेती और प्रचुर जैव विविधता, पर्यावरण के लिए कामधेनु का काम करती हैं. हिमालय ना होता तो भारतीय मानसून ना होता और दक्षिण एशिया का अधिकाँश भाग सहारा मरुस्थल की तरह वीरान होता, अतः इस दृष्टि से सम्पूर्ण दक्षिण एशिया का जीवनदाता है हिमालय. विद्वानों का मत है कि भारतीय भूभाग में जिस अनूठी मानव सस्न्कृति का विकास हुआ, उसके विकसित होते रहने में हिमालय का बहुत बड़ा योगदान है.

सर्दियों में योरोप से पूर्व की और बहने वाली सर्द हवाओं का अधिकाँश भाग हिमालय की श्रेणियों द्वारा उत्तर की ओर को परावर्तित कर दिया जाता है और सिर्फ एक छोटा हिस्सा ही भारतीय उप महाद्वीप में प्रवेश करता है. इसी कारण भारतीय उप महाद्वीप में जाड़ों में इतनी अधिक ठण्ड नहीं पड़ती है जितनी कि इन्ही देसान्तारों पर योरोप में पड़ती है और यहाँ का मौसम अपेक्षाकृत सुगम बना रहता है. हिमालय के कारण भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में बहने वाली अधिकाँश नदियाँ सदा नीरा हैं और यह जैव विविधता की प्रचुरता तथा सघन कृषि वाला क्षेत्र है.

पारिस्थितिकि विज्ञानी हिमालय द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप को दी जाने वाली पारिस्थितिकी सेवाओं को तीन भागों में बांटते हैं. सर्व प्रथम आपूर्तिकर्ता के रूप में: इसके तहत गंगा-यमुना, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों के मैदानी क्षेत्रों को जल एवं उपजाऊ मृदा की आपूर्ति. इस कारण इस क्षेत्र की उर्वरता और जल उपलब्धता के कारण इसे सर्वाधिक उपयोगी क्षेत्रों में से एक बनाती है. दूसरी भूमिका नियंत्रक के रूप में: इसके तहत भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून और सम्पूर्ण जलवायु के रूप में हिमालय की भूमिका को रख सकते हैं. और तीसरा हिमालय इस की बहु-उपयोगी जैविविधता हिमालय के कारण प्राकृतिक रूप से इस उप महाद्वीप की कुल जैव विविधता का संरक्षण भी इसकी महत्वपूर्ण पारिस्थितिक

सेवा है.

यद्यपि कवियों ने हिमालय को अटलता, दृढ़ता का प्रतीक माना है परन्तु वाताविकता यह है कि हिमालय अत्यंत भंगुर श्रेणिया है. ये विश्व की सर्वाधिक् शैशव श्रेणिया हैं एयर इनके बनने की प्रक्रिया अभी भी बदस्तूर जारी है. इसी कारण यहाँ भूगर्भीय हलचलें होती रहती हैं और लगातार छोटे बड़े भूकंप आते रहते हैं. भूकम्पों के अलावा भूस्खलन, हिमालय की नदियों में आने वाली अचानक बाढें, अतिब्रिष्टि जनित आपदाएं, वनाग्नि और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाएं हिमालय क्षेत्र को विश्व के चंद सर्वाधिक प्राकृतिक आपदाओं वाले क्षेत्रों में शुमार करती हैं.

हिमालय और हिमालय के जड़ में सम्पूर्ण क्षेत्रों में सर्वाधिक नुकसान तो यहाँ समय समय पर आये भयानक भूकम्पों के कारण हुआ है. इनमें सन् 1505, 1828,1885, 2005 तथा 2015 के कश्मीर भूकंप, 1905, 1975 के हिमाचल भूकंप, 1803, 1916, 1991, 1999 के उत्तराखंड भूकंप, 1897, 1932, 1950, के उत्तरपूर्व भूकंप, 1934, 2015 के बिहार तथा नेपाल भूकंप..विनाशकारी भूकम्पों की श्रृंखला के बानगी भर हैं.

भूकम्पों के सम्बन्ध में यहाँ यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि पिछले दो ढाई सौ सालों में हिमालय में कश्मीर से लेकर असम तक हर जगह बड़े भूकंप आ चुके हैं जिनमे 1905 का कांगड़ा भूकंप , 1934 का नेपाल बिहार सीमा का भूकंप और 1950 का आसाम भूकंप प्रमुख हैं जो कि रिक्टर स्केल पर 8 या उससे अधिक विराटता के थे..हिमालय का उत्तराखंड वाला करीब सात सौ किमी वाला क्षैतिज क्षेत्र ऐसा है जनहान अभी तक ज्ञात इतिहास में इतना बड़ा भूकंप नहीं आया है. लगभग सभी भूकंप विज्ञानी मानते हैं कि हिमालय में अगला 8+ तीब्रता का भूकंप का क्षेत्र उत्तराखंड ही होगा. विशाल भूकम्पों से अभी तक निरापद इस क्षेत्र को भूकंप विज्ञानी 'मध्य भूकंपीय नीरवता' याने कि 'सेन्ट्रल सिस्मिक गैप' वाला क्षेत्र मानते हैं.

भूकम्पों के अतिरिक्त दूसरी बड़ी समस्या जिससे हिमालय जूझ रहा है वह है मौसम परिवर्तन जनित प्रभाव. वैज्ञानिकों का कहना है कि विश्व का तापमान लगातार बढ़ रहा है और तापमान बढ़ने की यह गति अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा हिमालय में सर्वाधिक है. इसका सीधा मतलब है कि हिमालय के ग्लेसियरों का तेजी से पिघलना. ग्लेसियरों के पिघलने की गति खतरनाक हद तक पहुच गयी है और कुछ वैज्ञानिक तो कुछ दशकों में हिमालय के अधिकाँश ग्लेसियरों का अस्तित्व समाप्त होने की भविष्यवाणी भी कर चुके हैं. इसका सीधा सम्बन्ध यहाँ से निकलने वाली नदियों के अस्तित्व पर तो तत्काल पडेगा ही. प्रतिष्ठित विज्ञान शोध पत्रिका "नेचर जियोसाइंस" के ताजा अंक में प्रकाशित एक शोध के अनुसार मौसम परिवर्तन के कारण हिमालय में बन चुके अथवा बन रहे लगभग पांच सौ से अधिक जल विद्युत् परियोजनाओं के भविष्य पर गंभीर संकट पैदा तो हुआ ही है साथ ही इन परियोजनाओं के कारण नदी घाटियों में निवास करने वाले करोड़ों लोगों की जिंदगी पर भी बड़ा संकट पैदा हो गया है. शोधपत्र के अनुसार तापमान में हो रही वृद्धि के कारण नदियों में पहले पानी की मात्रा में वृद्धि होगी और फिर नदियों में बहाव अत्यंत कम हो जाएगा. इसी तरह शोधपत्रिका 'साइंस' में प्रकाशित एक अन्य शोध के अनुसार उत्तरी गोलार्ध में बने हज़ारों बांधों ने नदियों के पहाड़-मैदान पारिस्थितिकअन्तर्सम्बन्धों को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है. नदियों द्वारा प्रदत्त 'इकोसिस्टम सर्विस' पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है. जलागम क्षेत्रों में अपरदन और अवसादीकरण तो बढ़ा है परन्तु समुद्र में पहुंचने वाले अवसाद की मात्रा में उल्लेखनीय कमी आयी है..मैदानी क्षेत्रों में भी पहाड़ों से बाह कर जमा होने वाले अवसादों की मात्रा में बड़ी कमी आयी है. अभी भी व्यापक अनुभव की जरूरत है.

सन 2013 में घटित केदारनाथ आपदा के बाद आपदा के आकार पर जल विद्युत् परियोजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित हाई पावर कमेटी ने पाया कि घाटियों में विद्यमान हाइड्रोपावर परियोजनाओं में कारण आपदा के आकार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. इस आधार पर कमिटी ने उत्तराखंड की विभिन्न घाटियों में 13 निर्माणाधीन परियोजनाओं को तत्काल बंद करने की सिफारिश की. 7 फरवरी 2021 को उच्च हिमालयी क्षेत्र में अलकनंदा-धौलीगंगा की सहायक नदी ऋषिगंगा में अचानक बाढ़ आने से इस क्षेत्र में स्थित दो विद्युत् परियोजनाएं नेस्तनाबूत हो गयी थी. इस आपदा में दो सौ से अधिक बाँध कर्मियों की मृत्यु भी हुई थी. विभिन्न शोधों में यह बात सामने आयी है कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों की संवेदनशीलता के कारण कमसेकम इन क्षेत्रों में विद्युत् परियोजनाओं का निर्माण तत्काल प्रभाव से बंद कर देना चाहिए।

मौसमी परिवर्तन से अति बृष्टि की घटनाएं बढना, वर्षा के वितरण में उल्लेखनीय बदलाव, और नदियों में गाद की मात्रा में वृद्धि शामिल है. विशेषज्ञ मानते हैं कि मौसम में आ रहे इस बदलाव के कारण हिमालय की कई दुर्लभ बनस्पतियां और जंतु विलुप्त हो जायेंगे. केदारनाथ त्रासदी जैसी अतिवृष्टि जनित आपदाएं बढेंगी, नदियों का व्यवहार असामान्य होता चला जाएगा.

उपरोक्त वर्णित प्रभाव या तो प्राकृतिक हैं या फिर ग्लोबल स्तर पर मानवकृत क्रिया कलापों के परिणाम हैं. परन्तु हिमालय पर मानवकृत हस्तक्षेप से चुनोतियाँ कई गुना गंभीर हो गयी हैं. अंधाधुंध बांधो का निर्माण, बड़े स्तर पर वनों का कटान, सडकों का निर्माण, और नदी मार्गों पर वस्तियाँ बसाना ये कुछ ऐसे क्रिया कलाप हैं जिनसे हमने अपने को बारूद के ढेर पर खडा कर दिया है. बांधों से नदी पारिश्तितिक तंत्र की अविरलता तो बुरी तरह से प्रभावित होती ही है, इनसे हिमालय का मैदाने से पारिस्थितिक सेवा वाला रिश्ता भी असम्बद्ध हो जाता है. हम यह भूल जाते हैं कि हिमालय की नदियाँ केवल पानी ही नहीं बहाते हैं, वे हिमालय से बहुमूल्य मिट्टी भी बहाती हैं जो मैदानों की उर्वरता को अक्षुण बनाए रखती है. बांधों से मिट्टी का बहाव रुक जाता है जो कालान्तर में विनाश्कारी साबित होगा. इसके अतिरित नदी के जीवों का गमन वाधित हो जाता है. मछलियाँ प्रजनन के लिए उपरी क्षेत्रों में जाती हैं. बांडों से उनकी आवाजाही ठप्प हो जायेगी. यहीं नहीं कई वन्यजीवों का उपरी क्षेत्रों में नदी के दोनों तरफ आवागमन बुरी तरह से प्रभावित होगा. फलतः कई प्रजातियाँ नष्ट हो जायेंगी. वैज्ञानिक मानते हैं कि टिहरी सरीके बड़े जलाशय भूकम्पों को उत्प्रेरित करने में भी सहायक होते हैं.

उत्तराखंड राज्य गठित होने के बाद बांधों की संख्या में तो बाढ़ आयी ही . इसके अतिरिक्त अंधाधुंध सडकों के निर्माण ने भी एक बिलकुल नयी समस्या खड़ी कर दी. सन दो हज़ार मे राज्य गठन से पहले उत्तराखंड में सिर्फ 8 हजार किमी सड़कें थी आज ये लम्बाई करीब चालीस हज़ार किमी पार कर गयी है. पहाड़ों में एक किमी सड़क बनाने में 20 से 60 हज़ार घन मीटर मलवा पैदा होता है. इस तरह से देखें तो केवल सड़क निर्माण से हम अभी तक लगभग दो अरब घन मीटर मालवा हम पहाड़ी ढलानों पर डाल चुके हैं..जिससे पहाड़ों की बनास्पतियों का भारी नुक्सान हुआ है, नदियों में मलवे की मात्रा में कई गुनी वृद्धि हो गयी, इस कारण नदियों में अचानक सैलाव की घटनाओं में यकायक तेजी आ गयी है.

भूस्खलन की घटनाएं तेजी से बढ़ी है. और. तेजी से ख़तम हो रही खेती को कई गुना अधिक नुकसान हुआ है.

हिमालय का एक त्रास यह भी है कि हिमालय के मुद्दों पर कुछ न बोल कर सिर्फ सदा सत्य बोलो टाइप के निरपेक्ष नेरेटिव के दंगल खड़े कर सरकार से पद्म जैसे अलंकरण और पर्यावरण के पुरूस्कार झटकने वाले स्वनामधन्य पर्यावरणविदों ने असल लड़ाइयों को और कठिन बना दिया है. ये तथाकथित पर्यावरणविद असली मुद्दों पर या तो चुप रहते हैं और या फिर सरकारों के पक्ष में खड़े रहते हैं और जनता की लड़ाई कमजोर कर देते हैं। सरकारों के लिए ये नए नए उग आये पर्यावरणवादीयों की जमात मुद्दों को भटकाने के नए संसाधन के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं. हिमालय के गंभीर मुद्दों के लेकर उठाये जाने वाले बड़े कदमों के बजाय हिमालय दिवस जैसे अवसर सरकारी समारोह बन कर रह जाते हैं. सितम्बर माह प्रारम्भ होते हीउत्तराखंड सरकार 'हिमालय बचाने की प्रतिज्ञा' का समारोह टाइप अभियान चलाती है और मंत्री से लेकर संतरी तक, स्कूल से लेकर कॉलेज प्रतिज्ञाएं लेने में मशगूल हो जाते हैं. और इस तरह हिमालय बचाने की रस्में अदा हो जाती हैं. हिमालय दिवस का सार्थक उद्देश्य तो तब फलीभूत होगा जब इस दिन सरकारें और जन समुदाय अपना एक बेरहम ऑडिट करें कि पिछले एक वर्ष में हमने ऐसा क्या किया कि हमारे हिस्से का हिमालय थोड़ाबहुत ही सही पर बचा तो! नहीं तो सरोकारों के समारोह बन जाने से केवल उन्ही को फ़ायदा होगा जो हिमालय की दुर्गति के लिए जिम्मेदार हैं.

हिमालय की चुनौतियों का वर्णन एक लेख ही में समेटना असंभव है. तथापि इसमें हमने कोशिश की है कि खतरे कि एक बानगी दिखाई जाय.

नाटक - किस्सा गंगा जमुनी मोहल्ले का

रत्ना कौल जी द्वारा लिखित इस कहानी का नाट्य रूपांतरण एवं दृश्य-परिकल्पना प्रख्यात नाट्य निर्देशिका चित्रा मोहन जी ने किया है. 16 जनवरी, 2024 को संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, लखनऊ में इस नाटक का सफल मंचन हुआ ....प्रस्तुत है "किस्सा गंगा जमुनी मोहल्ले का" :

(मंच पर अंधेरा है। फ़िल्म'चौदहवी का चाँद' का गीत ये लखनऊ की सरज़मीं का मुखड़ा (स्थायी) और अंतरा उभरता है/गीत के बोल पर (Preset) पर हल्का प्रकाश आने के साथ साथ कलाकारों द्वारा मंच पर निर्देशनुसार नृत्य-संयोजना और दृश्य की स्थापना होगी / इस पूरे गतिविधि में लखनऊ के कुछ ख़ास प्रतीक जैसे इमामबाड़ा, रूमिगेट, मनकामेश्वर मंदिर, सिद्धनाथ मंदिर, अलीगंज हनुमान मंदिर, बारादरी के चित्र दिखाई देंगे, साथ साथ अमीनाबाद की तंग गलियाँ और बाज़ार, हज़रतगंज की सड़के आदि भी चित्र में दिखेंगे जो कलाकारों द्वारा मंच पर नृत्य गतिविधि के दौरान प्रदर्शित किये जा सकेंगे। गीत की समाप्ति होते होते मंच के भाग में सूरैयाबेग़म का घर नज़र आता है। एक चौकी पर पानदान, दलिया में पान और सारौता, एक हुक्का भी रखा दिखाई देता है। हल्का हल्काप्रकाश मंच के अग्रभाग में आता है, जहाँ साइकिल पे सवार एक युवक पीछे दूसरे युवक को बिठाए अन्दर आता है, दोनो साएकिल एक कोने में खड़ी कर के सामने से आती दो लड़कियों को देख कर ठिठक जाते है।)

(एक लड़की बुर्के में है, दूसरी सलवार-क़मीज़ दुपट्टे में है, दोनो के हाथों में किताबें हैं। दोनो खिलखिलातीं हुई आगे आती है तभी बुर्क़वाली लड़की की चप्पल टूटती है, वो लड़खड़ा जाती है, किताबें ज़मीन पर गीर जाती है। ये देख दोनो लड़के दौड़ कर आगे आते हैं, एक चप्पल जोड़ने की असफल कोशिश करता है, दूसरा किताबें उठाकर सहेजने में मदद करता है।)

लड़का (नासिर) - (टूटी चप्पल लटकाए हुए) - हाय रे क़िस्मत ! तू चप्पल ना हुई गोया किसी आशिक़ का दिल हो गई, जो सरे राह टूट जाया करता है।

बुर्क़वाली लड़की:- हाय रे क़िस्मत (दूसरी चप्पल उठाकर) तू चप्पल ना हुई गोया किसी थानेदार का डंडा हो गई जो सारे राह बरस जाया करता है। **(दोनो हँसती हैं)**

लड़का (आतिश):- नाराज़ ना हों मोहतरमा.. मेरा दोस्त थोड़ा शरीर है मगर बतमीज़ नहीं। ये लीजिए अपनी किताबें (दूसरी लड़की से), देखिये... इनकी चप्पल टूट गई है, चलने में परेशानी होगी, आप दो घड़ी बैठ जाए तो मेरा दोस्त..... नासिर... नाम है इसका, ये चप्पल बनवा लाएगा- (नासिर गुस्से में घूरता है फिर मुस्कुराता है...।)

नासिर:- जी जी... बिल्कुल दुरुस्त है, लाइए मैं आपकी चप्पल बनवालाता हूँ **(लड़की चप्पल देती है, नासिर जाता है।)**

लड़का (आतिश):-जी मेरा नाम आतिश है, आप दोनो का नाम जान सकता हूँ...?

लड़की (मनोरमा):- मैं मनोरमा, बग़ल वाली गली में जो राधेश्याम संदफ जी रहते है, उनकी चचेरी बहन हूँ, बी. ए. करने लखनऊ आइ हूँ।

आतिश:- ओह.. तो आप हमारे संदफ साहेब यानी राधेश्याम पांडेय जी की बहन निकली! भाई उनके घर शेरों शायरी की महफ़िल में हमारा तो खूब आना जाना होता है।

मनोरमा:- अच्छा तो जनाब शायर है, ये आतिश तख़ल्लुस है या नाम?

आतिश-बंदे को कहते है आकाश माथुर... आतिश तख़ल्लुस है।

बुर्क़वाली- वाह आतिश मियाँ... आपकी शायरी के बड़े चर्चे है। घर- घर में आपके कलाम, आपकी ग़ज़लें पढ़ी जाती है। हमारे अब्बू आपके फैन है।

आतिश- जी ज़र्रानवजी है आपकी, वैसे आपसे भी तर्रूफ हो जाता

बुर्क़वाली- जी मैं नवाजुद्दीन साहब.. वही सफ़ेद कोठी वाले की छोटी बहन रक्शा हूँ। मनोरमा के साथ ही पड़ती हूँ।

आतिश-आप दोनो से मुलाक़ात हो गई ये ख़ुशक़िस्मती है हमारी (तभी नासिर चप्पल लेकर आ जाता है)।

नासिर- ख़ुशक़िस्मती आपकी है मोहतरमा, जो ज़नाब मोची साहबमिल गए, दुकान बड़ा चुके थे। हज़ार मिन्नतें कीं तो राज़ी हुए।

रक्शा- शुक्रिया... नासिर मियाँ-कितने पैसे हुए?

नासिर-तौबा तौबा, हम आपसे पैसे लेंगे...?

रक्शा-देखिए..., ये तो नाइंसाफ़ी है, पैसे तो लेने पड़ेंगे।

नासिर-(आतिश से) - अमाँ यार आतिश, आप ही कुछ कहिए...

आतिश-हम क्या कहें? जो कहना है, आप खुद कहे-

नासिर-

ये सिलसिला लेनदेन का छोड़िए ज़नाब
मौक़ा-ए-ख़िदमत तो दीजिए ज़नाब
आज टूटी एक, तो बनवा लाए हैं ज़नाब
कल शौक़ से तोड़िए... दूसरी भी ज़नाब ॥

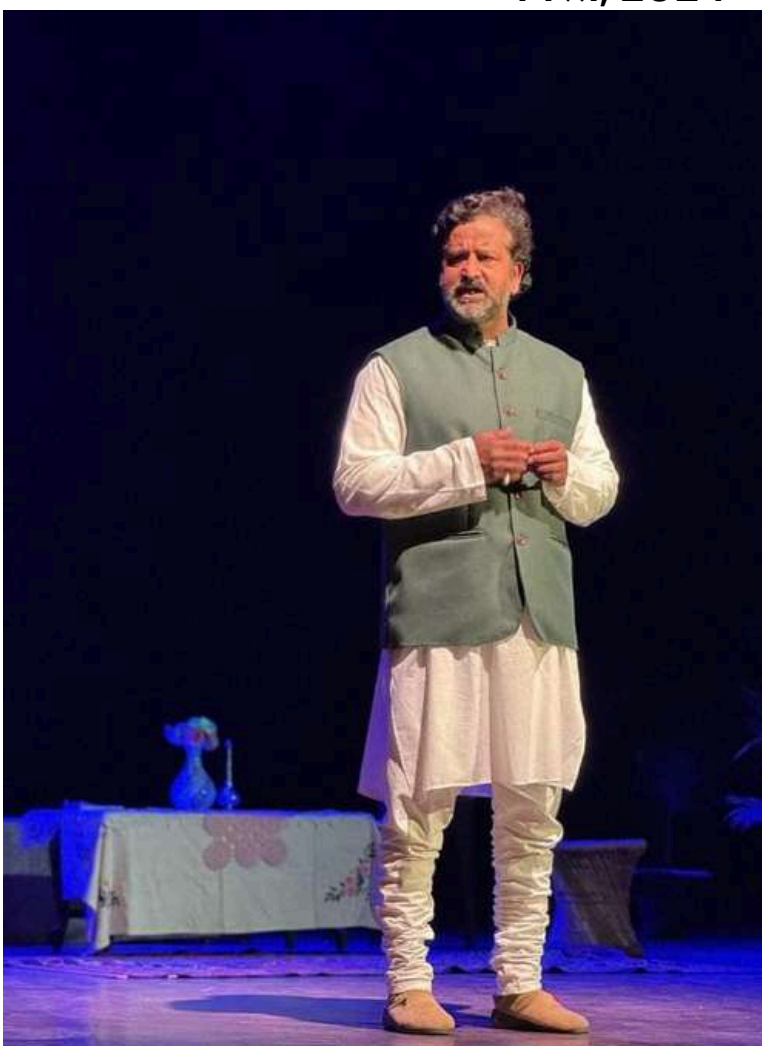

मनोरमा-

भाभी हूँ आपकी, ठहरिए तो ज़नाब
ईनाम समझ के पैसे लीजिए ज़नाब ॥

(आतिश वाह कहते है, मनोरमा झेंप जाती है, दोनो लड़कियाँ मुस्कुराती है, सब खिलखिला कर हँसते है तभी नेपथ्य से शोर सा उठता है.....)

चिढ़ी हुई सी बुडुन खाला का प्रवेश-

बुडुन-रोनामुरादों, शैतान की औलादों, ख़ुदागस्त करे ऐसे बदजुबानो को। ए तौबा... हैं... लड़के है या जी का जंजाल। कमबक्खतो को ज़रा भी शर्म लिहाज़ नहीं है, बड़े बुजुर्गों का?.....

(तब दोनो लड़कियाँ बुडुन खाला को देखकर निकल जाती है। आतिश और नासिर भी निकलने को होते है तभी बुड्डून खाला साइकिल पकड़ लेती है। नासिर पीछे बैठा है... बोल पड़ता है)

नासिर-लहौल विला कूबत....साइकिल छोड़िए बुड्डी खाला.. हम गिर पड़ेंगे।

(बुड्डुन खाला उन्हें खींचकर गिराय ही देती है, नासिर हाय-हाय करता उठता है)

बुड्डन खाला- ए मरदुए... मैं बुड्डी खाला हूँ! अभी देख कितना ज़ोर है मेरे बाजुओं में।ए, मेरे हाथ-पाव तो चलते ही चलते है, जुबान छुरी से भी ज़्यादा तेज़ चलती है, बड़ा आया हमें बुड्डी खाला कहने वाला. अरे सिरफिरे? नाशूके लौंडे, बुड्डी कहने से पहले तेरी जुबान न ऐंठ गई? गटर के कीड़े, बुड्डी होगी तेरी दादी, नानी... बुड्ढा होगा तू, तेरी जवानी, हाय हाय, हमें बुड्डी कहता है?ए हैं अभी मेरी उम्र ही क्या हुई है, वो तो कमबख़्त वक़्त की मार ऐसी पड़ी कि ये महजबी बहारें गुल से उजड़ा चमन हो गई।

आतिश- माफ़ करे, मेरे दोस्त से जो भी बहदबी हुई उसके लिए मैं आपसे माफ़ी माँगता हूँ...महज़बी खाला।

बुड्डुन- आए हाय-क्या शीरी जुबान पाई हैं। लफ़्ज़ तो मोती से बिखरते हैं, अदब, लियाक़त इसे कहते है। जीते रहिए बरखुरदार। अल्ला रहम करे आप पर और आपके इस दोस्त पर भी, जो हमें ख़ामख़ा बुड्डी बना रहा।

नासिर-अब गुस्सा थूक भी दो माहज़बी खाला। हो गई हमसे नादानी। लीजिए कान पकड़ते हैं.... अब हम जाए? इजाज़त हैं..?

(बुड्डन हाँ बोलती है... दोनो साइकिल पर बैठकर बाहर जाते है तभी नासिर खुद कर उतरता है और शैतानी से बोलता है.....)

नासिर - अरे ....ख़ुदा हाफ़िज़ बुड्डी खाला।.... (कहकर भाग जाता है) बुड्डुन फिर चिल्लाती है.....

बुड्डून- ठहर जा, तू टिड्डे की औलाद, रुक जा.....तेरी टांगे तोड़ कर चूरमा बनाऊँगी, करमजले, नफ़रमान, बेईमान, तुझ पर शहद की मक्खियाँ टूट पड़े, तेरा बेड़ा गर्क हो जाए

(तभी बुड्डून थक कर बैठ जाती है....तभी नासिर पलट कर आता है, खाला को गले लगाकर माफ़ी माँगता हैं। अपनी ज़ेब से डिब्बा निकालकर पान खिलाता है, फिर खाला बोलती है.....)

बुड्डन- देखा-देखा आप सबने..... ये गली के लड़के, नोज़वान सब छेड़ते है मुझे बुड्डी खाला कह कह कर के। 'बुड्डी' नाम मेरी छेड़ बन गया है, लेकिन सब प्यार भी बहुत करते है मुझे। मुहल्ले की माहज़बी खाला हूँ मैं। जिस घर जाती हूँ रौनक़ आ जाती है वहाँ। अब आए क्यों नही..? जाने कितनी कहानियाँ परी पड़ी मेरे कुर्ते की जेबों में। जितनी तितलियाँ हैं आसमानो में, जितने फूल हैं बागों में, जितने सितारे हैं फ़लक पर, उससे कहीं ज़्यादा कहानियाँ जुबानी याद है मुझे।.... क़सम खिला लो जो रत्ती भर झूट बोलती तो...? हर घर का हाल जानती हूँ, पर करम ख़ुदा का, सबका भला चाहती हूँ। चार दिन की चाँदनी, आँधी से ज़्यादा काट गई, बची-खूची सबके साथ, प्यार मोहब्बत से कर जाए तो ऊपर वाले की मेहरबानी....

ए हां... याद आया, अभी तो सूरेया बेग़म ने बुलाया था क्या? कौन सुरेया बेग़म, अजी वही हमारे नवाजुद्दीन साहब की शरिके हयात आज उनकी कहानी सुनाती हूँ तो सुरेया बेग़म तीन बहुओं की लाड़ली सास, शोहर की ख़ास,बेटे-बहुओं के लाड़-प्यार, इज्जत-अफ़जाई से खिली-खिली रहती हैं (ये कहते कहते सुरेया बेग़म वाले हिस्से में आ जाती है) ए! क्यों न हों... बेटे-बहुए हाथों-हाथ जो रखते हैं।

(मंच पर गाव तकिये के सहारे बैठी सुरेया नज़र आती है। बहुए उन्हें घेरे हैं, कोई नई चूड़ी पहना रही, कोई उनकी पाज़ेब ठीक कर रही, कोई पान लगा कर गिलोरि थमा रही है। तभी दूर से आते नवाजुद्दीन को देखती बुड्डुन खाला बोल पड़ती है -)

(अंदर से नवाजुद्दीन साहब आ रहे है)

बुड्डून- ये जो सफ़ेद रेशमी कुर्ता सिल्क का, नीले रंग का तहबंद और ये जो खूबसूरत नई जैकेट पहनी है न इन्होंने... ये छोटी बहू लाई है। तो ये ज़नाब नवाजुद्दीन मियाँ जो कितनी शान से गाव तकिए के सहारे सहन में रखे दीवान पर पसर कर बैठ गए है।

ऐ हैं..! ख़ुदा इन सबको नज़रें बंद से बचाए - नक्ख़ास, अजी अपने लखनऊ का नक्ख़ास बाज़ार, वोहि रेडीमेड कपड़ों का ढेर ठेले पर रख कर बेचने वाले नब्बन के दिन ऐसे फिरेंगे किसी को गुमान भी नहीं था--'अबे नब्बन' ऐसा कह कर पुकारे जाने वाले नब्बन मियाँ अब नवाजुद्दीन साहब कहलाते हैं-

(संगीत.....)

ख़ुदा झूट ना बुलवाए, क़िस्मत के रंग देख रहे हैं लोग, ढलती उम्र का बोझ इनके काँधो पर नहीं पड़ा है, बल्कि उम्र बड़ने के साथ वह और ज़्यादा चोड़े, मज़बूत और तने हुए दिखने लगे हैं

(सारे लोग सामूहिक हँसी गूँज उठती है.....)

बहू-१-वाह अब्बू जान वाह.... आप कितने प्यारे क़िस्से सुनाते हैं।

बहू-२-क़िस्से ही नही अब्बा मियाँ गाते भी बहुत उम्दा हैं.... अब्बा कुछ सुनाइए न

बहू-३-अब्बू आप मेहंदी हसन साहब की ग़ज़ल सुनाइए, एकदम वैसा ही गाते है आप।

नवाजुद्दीन-अरे-रे आज तुम सब ने भंग चढ़ाई हैं क्या? या फिर सबके सब मिलके मेरी ही टाँग खिचने पर आमादा हो।

सुरेया-अजी क्यों बहाने बना कर बच्चों का दिल तोड़ते हैं..?

(तब तक बड़ा बेटा अक़बर मिठाई लिए अंदर आता है)

अक़बर-अब्बा-अम्मी.... लीजिए मिठाई खाइए.....एक ख़ुशख़बरी लाया हूँ।

(सब एक साथ बोलते है- ख़ुशख़बरी-कैसी ख़ुशख़बरी?)

अक़बर-हमारे बिज़नेस के लिए हमें मुंबई और दुबई से दो बड़े ऑर्डर मिले हैं। लाखों का मुनाफ़ा हाथ आया है

(सब हाथ उठा कर ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करते है और मिठाई खाते है, तब तक बुडुन भी अंदर आ जाती है, दुआ-सलाम के साथ मिठाई खा कर आशीष देती हैं)

बुडुन- ऐ मेरे लाल को इस माहज़बी खाला की हज़ार-हज़ार दुआयें। खूब फूलों-फलों, ख़ुदा नज़र-बंद से बचाए, तुम्हारे कुनबे में जल्दी से नया मेहमान आए तो इस माहज़बी को भी नया जोड़ा और शगुन नेग मिले और फिर मैं भी इतरा इतरा के गाऊँगी

(गीत-
गाओ गाओ री सोहर गाओ-
ढोल बजाओ, जच्चा के घर फूल खिला हैं
जच्चा का ललना, झूले सोने का पलना
आओ आओ रि काजल लगाओ
दादी रानी से नेग मिला है
दादा जानी से नेग मिला हैं....)

(ठुमक ठुमक कर नाचतीं माहज़बी को देख कर सब ख़ुशी से नाचने लगते है... तभी सुरेया बोलती हैं...)

सुरेया-माहज़बी खाला! आपकी दुआ रंग लाए, हम एक नहीं पाँच जोड़ें देंगे आपको.... वैसे इधर कैसे आना हुआ अचानक?

बुडुन खाला-ऐ सुरेया बहू ऐसे नही आइ ज़रूरी ख़बर देने आइ है

(सब उसका मुँह देखते हैं) - ऐ ऐसे ना ताको हमें, दरसल आज हम कश्मीरी महल्ले गए थे तो, आपके चच्चाजान के घर भी जाना हुआ। ख़ुदा झूट ना बुलवाए, आपके चाचा बहुत बीमार हैं, सो कहलवाया है कि आकर मिल जाए, बीमारी से बेज़ार हैं बेचारे और आपसे मिलने के तलबगार हैं.....!

सुरेया-(नवाजुद्दीन से)- चच्चा बुला रहे हैं। मिल आइए जा कर। पके पान हो रहे हैं, ना जाने कब ढुलक जाए...?

नवाजुद्दीन-अरे बेग़म, यक़ीन कजिए, अपने भरे पूरे घर की ये जन्नत छोड़ कर मैं ख़ुदा के घर भी जाने को तैयार नहीं हूँ, फिर चचा कोन सी शह हैं?

सुरेया-तौबा कीजिए, लाहोल पड़िए, नज़र ना लगाइए मेरे कुनबे को!

नवाज़-वाह भई वाह.... ये आपका कुनबा हैं? तो फिर मेरा कहाँ हैं?

सुरेया-अरे क्या मेरा क्या आपका, ये हम सबका कुनबा हैं!

अक़बर-तो इसी बात पर अब्बा हो जाए मेहंदी हसन की ग़ज़ल....

नवाज़-अच्छा ठीक है.. पर हमारा पेटी बाजा तो लाइये, बिना उस पर उँगली फिरायें कोई कैसे गुनगुनाए...?

(अक़बर जाता है, बहुएँ सब दर्शकों की तरह बैठने का स्थान बनाती हैं, बुडुन खाला भी एक ओर बैटती हैं तब तक पेटी बाजा (हारमोनियम) आता हैं)

नवाज़ उँगली चलाते हैं (recorded) गीत शुरू होता हैं! (दुनिया किसी के प्यार में जन्नत से कम नहीं इक दिलरुबा है तू जो फूलों से कम नहीं-मेहंदी हसन...)

एक अंतरे तक आकर गाना ख़त्म करते है, सब ताली बजाते हैं। सुरेया पान का बीड़ा शोहर को खाने को देती हैं। नवाज़ पान खाते हैं)

अक़बर-वाह अब्बू क्या गला पाया हैं, वैसे अम्मी.... अब्बू आप दोनो रिवर्स गियर में चल रहे हैं, कुछ अर्से तक ऐसे ही चला तो फिर से कॉलेज में दाख़िला करवाना पड़ेगा!

सुरेया (नक़ली गुस्से में) - हट परे यहाँ से, नज़र लगा रहा है, अपने अम्मी-अब्बू को.....? सच कहूँ बेटा यह कमाल तो मेरी बहुओं की ख़िदमत का है..।

अक़बर-और बेंटो का कुछ भी नही...?

सुरेया-क्यों नहीं... क्यों नही, सदके जाती है अपने बेटों के। किस ख़ूबशूरती और ज़िम्मेदारी से अपने अब्बू का काम सम्भाला है। फ़र्श से अर्थ पे बैठा दिया है हम दोनो को, फिर बुढ़ापा हमें अपनी सुरत दिखालते डरता है।

(शेष अगले अंक में .....)

संगीत और शिव

संगीत - इस सृष्टि का सबसे सुन्दर शाश्वत सत्य। शास्त्रीय पक्ष के अनुसार, यह अनंत नाद से युक्त है तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी ; संगीत सार्वभौमिक भाषा, भाव तथा अनवरत कम्पन (नाद) के रूप में सर्वव्याप्त है। शायद इसी कारण इसे सभी ललित कलाओं में सबसे सुन्दर और सर्वश्रेष्ठ कला भी माना गया है। सबसे अद्भुत और आश्चर्य की बात यह है कि, 'शिव' की व्याख्या भी कुछ ऐसे ही होती है।शिव का सबसे छोटा और सबसे सटीक परिचय "सत्यं शिवं सुन्दरम्" इस पंक्ति से मिलता है। जो इस सृष्टि का एकमात्र सत्य है, जो सबसे सुन्दर है, वही शिव है। दर्शन शास्त्र के अनुसार, सत्य वह है जो निरंतर है, जो तीनों काल में समान रूप से विद्यमान है, जो अजन्मा है, अनंत है, अकारण है, जो अपरिवर्तनीय है। जो शाश्वत है; वो सत्य है, जो सत्य है; वही सुन्दर है। संगीत और शिव, दोनों की ही व्याख्या; 'सत्य' शब्द से पूरी होती है।
लेकिन संसार का 'सत्य' हमेशा एक ही होता है, दो नहीं। इसलिए यह मानना गलत नहीं होगा कि, संगीत ; कुछ और नहीं अपितु स्वयं शिव ही हैं। जिस प्रकार शिव आदि हैं और अनंत भी, ठीक वैसे ही संगीत भी है। ब्रम्हांड में एक कण से लेकर सूर्य, तारों, ग्रहों तक ; हर जगह शिव नाद के रूप में, अर्थात संगीत के ही रूप में व्याप्त हैं। सृष्टि के हर कण में, संगीत है; शिव है। इसीलिए कहते हैं "कण-कण में शिव है"।

वैष्णवी श्री
संगीत छात्रा
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी, उ.प्र.

पानी में डूबने के कारण एवं बचने के उपाय

डॉ. नन्दकिशोर साह
District Mission Manager
(SM&CB)
UP State Rural Livelihood Mission,
DMMU- Etawah, Vikash Bhavan, UP

बरसात में देश के विभिन्न क्षेत्रों में नदी, नहर, कुआँ, तालाब, गहरे गड्ढे, झील, पोखर, जल प्रपात आदि जलाशयों में स्नान करने, जानवर नहलाने या कपड़े धोने जैसे रोज़मर्रे के काम के दौरान विभिन्न कारणों से अनजाने में बच्चों, किशोर-किशोरियों तथा वयस्क व्यक्तियों की डूबने से मृत्यु होती रहती है। सावधानी, सतर्कता एवं जागरूकता के द्वारा इस अमूल्य जीवन को नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

खतरों की उपेक्षा या कमतर आंकना या गलत जानकारी, सही व सटीक जानकारियों के बिना नहर में जाना, निगरानी एवं पर्यवेक्षण की कमी, तैराकी का अभाव, कम उम्र के बच्चों को अभिभावकों द्वारा नदियों एवं तालाबों में नहाने के लिए अकेले छोड़ देना, पानी में डूबते व्यक्ति को बचाने हेतु बिना तैयारी और अनुभव के पानी में कूद पड़ना आदि डूबने से होने वाली मौतों के प्रमुख कारण है ।

अगर आप भली प्रकार तैरना जानते हों और साथ ही साथ डूबते को पानी से बाहर लाने की कला जानते हों तब ही आप किसी को बचाने के लिए पानी में जाये अन्यथा आपके जीवन को भी खतरा हो सकता है। यदि आप के निकट पानी में कोई डूब रहा है तो आप उसे बचाने के लिए पानी के बाहर से जो भी उपलब्ध साधन जैसे बांस का टुकड़ा, रस्सी, कोई लंबा कपड़ा जैसे साड़ी, धोती बाहर से फेंक कर डूबते हुये व्यक्ति को पकड़ने को कहें और उसे धीरे-धीरे बाहर खींच कर लाएँ। किसी को डूबता देखकर मदद के लिए शोर मचाएँ, जिससे आस-पास के सक्षम लोग मदद कर सकें। डूबे हुये या डूबते हुये व्यक्ति को पानी से बाहर निकालने पर देखें कि वह व्यक्ति होश में है या नहीं। होश में रहने पर उससे सामान्य तरह से बात कर ढाढस बधाएँ, उसके नाक, मुह को देखें कि कुछ फंसा तो नहीं है, यदि है तो उसे निकालें और स्वच्छ पानी से साफ करें। प्रभावित व्यक्ति खाँसने, बोलने या सांस ले सकने कि स्थिति में है तो उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

यदि प्रभावित व्यक्ति का पेट फूला हुआ है तो पूरी संभावना है कि उसने पानी पी लिया होगा। अतः पेट से पानी निकालने के लिए अगर कोई स्वयं सेवक प्रशिक्षित है तो उसकी मदद लें अन्यथा नजदीकी चिकित्सक को बुलायें या सुविधानुसार प्रभावित व्यक्ति को अविलम्ब नजदीकी चिकित्सालय ले जायें। चिकित्सालय ले जाने के लिए जो भी साधन मौके पर उपलब्ध हो उसका प्रयोग करें अन्यथा 102/108 पर फोन कर एंबुलेंस बुला लें ।

स्नान करने के घाटों पर सुरक्षा उपकरण जैसे-लंबी व मजबूत रस्सी, बांस के लंबे टुकड़े, हवा भरे गाड़ियों के ट्यूब, लाइफबाय आदि सामग्रियों को रखें, जो आकस्मिक समय पर काम आयेंगी। तेज धार या उफनायी हुयी नदी, नहर, नाले, तालाब आदि में स्वयं एवं अपने स्वजनों को जाने से रोकें। बच्चों को पुल, पुलिया, ऊँचे टीलों से पानी में कूद कर स्नान करने से रोकें। नदी या जल निकाय के किनारों पर जाना और स्नान करना, यदि अति आवश्यक हो तो पानी में उतरते समय गहराई का ध्यान रखें।यदि उस स्थान या घाट के आस-पास कोई सलाह या दिशा-निर्देश लिखें हों तो उनका पालन करें। भली प्रकार तैरना जानते हों तभी पानी में उतरें या स्नान करें, अन्यथा स्थानीय प्रशासन द्वारा बताये गए स्नान करने के चिह्नित घाटों पर ही स्नान करें। एक साथ परिवार के कई लोग नदी या अन्य घाटों पर स्नान न करें। बच्चों को यदि स्नान करना हो तो बड़ों की कुशल देखरेख में ही स्नान करने दें। कोशिश करें किसी नदी या जल निकाय में सामूहिक रूप से स्नान करने जाते समय साथ में 10-15 मीटर लंबी रस्सी या धोती या साड़ी अवश्य रखें।

नदियों, नहरों, जलाशयों या अन्य जल निकायों के पास लिखी हुयी चेतावनी की अवहेलना न करें। छोटे बच्चों को घाटों, जल निकायों के समीप न जाने दें। एकदम से अनजान एवं सुनसान नदियों, नहरों, तालाबों के घाटों पर स्नान करने न जायें। किसी के उकसावे या बहकावे में आकार पानी में छलांग न लगायें। नदियों, नहरों या अन्य जल निकायों के घाट के किनारों पर पारंपरिक, धार्मिक, सामाजिक रीति-रिवाजों, अनुष्ठान, संस्कारों का निर्वहन करते समय किसी भी तरह की असावधानी न बरतें। जलासयों में कोई तैरती वस्तु या अन्य आकर्षक फूल इत्यादि के लालच में पड़कर उसे छूने, पकड़ने, तोड़ने न जायें। ऐसा करना जानलेवा हो सकता है। तैरना सीखने के लिए अकेले पानी में न जायें, किसी कुशल प्रशिक्षक या तैराक की देखरेख में ही तैराकी सीखें। तैरते या पानी में स्नान करते समय स्टंट न करें या सेल्फी आदि न लें, ऐसा करना जानलेवा हो सकता है।

चउधरी-चउधराईन

लेखिका - अनु

त भईया इ कहानी बा चउधरी-चउधराईन के। चौधरी जब बहरे से पढ़ के लउटलें न त गांव भर में हल्ला होई गै,मनई अइसन मिलें आवें जइसे चौधरी के जानो सिंग उगा होय। फिर लाग गै सरकारी नउकरी भैया, लाग चर्चा होय के इनकर बियाह केसे होय, सबके लड़का खोजात ह इनके बदे लड़की खोजाय लाग। अब आजमगढ़ के बड़का वकील साहब के एक्कै बहिन रहै। खैर बिआह के बात चलै लागल,ओह जमाने में लइकी देखै बदे चउधरी जिदिआय गैन, पहीले तो वकील साहब न देखावे बदे खुब पैंतरा मारेन बाकी बादै में लईकी के महतारी न जाने कानै में का फूंकिन वकील तैयार भएन बाकी एगो शर्त रहै के लड़की दूरै से देखा देखी होय। फिर का चौधरी के मामा अउर चाचा गएन पतोह देखै। लड़की एकदम काठ नाउं सीधा कुर्सी पर बइठी रही,सामने मेज पर किताब रखा रहा,एकटक कितबवै में ताकै, देखहरु खुश कि भईया कुर्सी पर बइठी बा, ध्यान किताबी में एतना बाए के किधरौ तकतऊ नाहीं बा। फिर का बिआह तय हुई गए।

लड़की जानो कड़ाही में खाएं होए त बिअहवै में लाग बुन्नी पड़ै, खुब दऊ बरसैं लागेन। खैर कइसहुं सेनूरदान भए भईया, अब जइसै सेनूर चौधरी लगाएन दुल्हीनिया पीढ़ा छोड़ी के खड़ी भएस, सब लागेन ताकै कि का भौ,तब लइकी कहेस के जबसे बियाह तय भै बा,गांव,घर,बहिन,महतारी सभै सिखावत रहा के जबलै सेनूर मांग में न पड़ी जाय तबलै बोलू जिन नाई त बढ़िया, लुग्गा, गहना, मिठाई न मिली। हमहु फायदा देख के चुप होई गै, बाकि अब नाई चुप रहा जात बा,हमारे मनसेधू(दूल्हा) के जूता तब्बै से कुत्ता चाट रहे बा, ओरा जाए तऊ का होई ।

अब का भईया चउधरी कपार पकड़ के बइठ गैंन अउर चउधराईन कूदत भागिन खेलै बदै।

सीख--भईया ...

बिआह आ जमीन खरीदै के होय त बिना ठोंक बजाय ,पता लगाय जिन करु

मन्नत का धागा

पुस्तक चर्चा

अनिता रोहलन "आराध्यापरी
नागौर, राजस्थान

लेखिका की कलम से

“मन्नत का धागा” की कहानी मेरे लिए बहुत सारी काली रातों के बाद सुनहरी सुबह जैसी है जिसे मैने हर रात,हर दिन, थोड़ा-थोड़ा लिख कर पूरा किया है । यह बिल्कुल वैसे ही है जैसे पानी में हम सब की भिन्न-भिन्न आकृतियाँ बनती हैं और हम उन सब आकृतियों को मिलाकर एक कर देते हैं, लेकिन उसी पानी मे दो लोगों की एक जैसी आकृति कभी नही बन सकती,कुछ ना कुछ अन्तर जरूर रहेगा । वैसे ही दो लोगों का एक कहानी को पूरा करना बड़ा ही रोचक होता है, दो लोग भी ऐसे जो एक दुसरे से बिल्कुल अलग हो ।मै अक्सर लिखते-लिखते खो जाती हूँ और बहुत कुछ लिखने लग जाती हूँ,अब आप मन्नत का धागा पढ़े तो साथ-साथ याद रखे हर कहानी एक सच है या तो वो अतीत में बीत चूकी है या आने वाले वक्त मे घटित होगी। मगर कहानी होती जरूर है और वो भी एकदम सच जो संसार से परे होती है "जैसे कि आपकी और मेरी कहानी”

कहानी मे अमन बेहद ही सरल और थोड़ा सा शैतान किरदार है लेकिन दुसरी तरफ स्वागता जो बिल्कुल झल्ली सी लड़की है लेकिन कुछ आदतो का समान होना और इंसानों का समान होना सामान्य से अलग बात है लेकिन दो विचारधाराओं का एक जगह रह पाना बहुत मुश्किल है ठीक वैसे ही जैसे बरसात में आग का जलना।
अब आप मन्नत का धागा पढे और साथ मे अपनी कहानी को भी लिखे और उसे आप पूरा करने के लिए जो भी कर सकते हैं करे बस अपने नैतिक मूल्यों से कभी समझौता ना करे ।

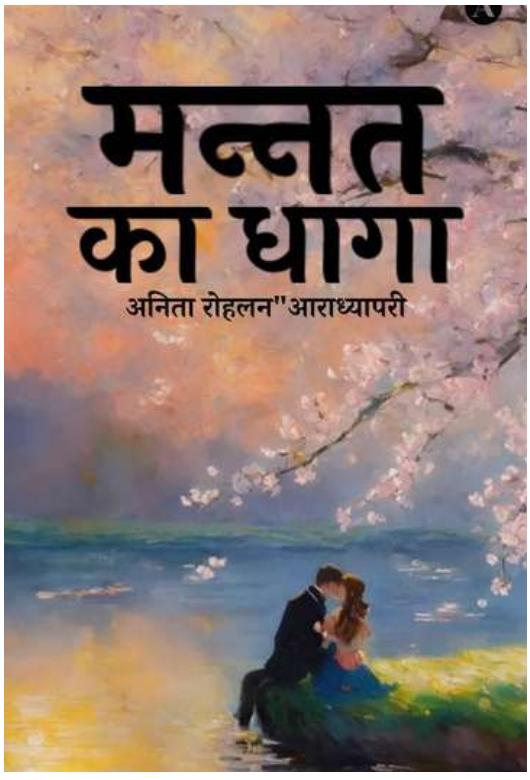

डॉ धनञ्जय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वोदय पी.जी.कॉलेज
घोसी, मऊ

1

अंधापन बहरापन गूंगापन,
कुछ भी पन, पर आदमी बन।
अंधापन बहरापन गूंगापन,
गांधी जी के तीन बन.....।
सुनती आंखे,
तकता मुंह,
और फुसफुसाते कान,
सल्तनत के गलियारे से कह रहे हैं,
गूंगे बहरे और अंधे कानून।।

2

तेल जला
बाती जली
लोग कहे दिया जली
तेल बाती ने दिए से कहा
जलो मगर प्यार से
नगद नही उधार से।।

3

जिसे, सभ्य समाज द्वारा
हर बार चाट चाट कर,
फेंक दिया जाय !.....
माननीयों की भाषा में,
चम्मच की यही परिभाषा है।

शायरा बानों
कवियित्री, प्रवक्ता जैश किसान इंटर कॉलेज
घोसी, मऊ

जल

नदी के जलधारा की कलकल
नदियों में उमड़ते ये चंचल जल।

ये शायर के मन में शेर जगाते
शायर के नयनों में महबूबा की तस्वीर बनाते
उसके मन को करते बेकल
नदियों में उमड़ते ये चंचल जल।

महबूबा से लहराते हैं
मटक मटक चलते,
कमर सा ये बल खाते हैं
जैसे शोख बदन ,मन हो चंचल ।
नदी के जलधारा की कलकल
नदियों में उमड़ते ये चंचल जल।

ये शायर की गजल बनाते हैं
फिर अपने सुर में गजल की साज बजाते हैं
नदियों के जलधारा की कलकल
नदियों में उमड़ते ये चंचल जल।

ये जीवन की राग बजाते हैं
यह जान फूंकते जीवों में
जीवों का जीवन अमिट बनाते हैं
कलकल शोर मचाते हैं
जी चाहें जिधर उधर रुख कर जाते जल
नदियों के जलधारा की कलकल
नदियों में उमड़ते चंचल जल।

झरने में जब इठलाते हैं
प्यार की धुन बजाते हैं
मीठी धुन में मीठा राग सुनाते
नदियों के जलधारा की कलकल
नदियों में उमड़ते चंचल जल।

विरेन्द्र जैन
युवा कवि, नागपुर
महाराष्ट्र

शीर्षक : पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण हेतु हमें संकल्पित होना है,
देवभूमि रूप इस धरती पर पर्यावरण को नहीं खोना है।

अब तक जो कुछ हुआ, हुआ उससे आगे अब बढना है,
पर्यावरण बचाने हेतु कुछ नये आयाम गढ़ना है।

पंचभूत तत्वों को सहेज कर ही पर्यावरण रक्षण होगा,
साफ शुद्ध हवा बहेगी जबपेड़ों का संरक्षण होगा।

बाग बगीचे जंगल आदि को काटना बंद करना होगा,
कंक्रीट बिछाना छोड़, नया इको फ्रेंडली शहर गढ़ना होगा !

हरियाली जब लौटेगी पशु पक्षियों को उनके घर मिल जाएंगे,
पारिस्थितिक चक्र सुधरेगा लुप्त प्रजातियां जीवन पाएंगे ।

कार्बन क्रेडिट कम करने की दिशा में दुनिया को आगे बढना होगा,
ओज़ोन परत बनी रहे सुरक्षित मिलकर काम करना होगा।

शहरी औ औद्योगिक दूषण कम करना सबकी जिम्मेदारी है,
जलवायु परिवर्तन रोकने चाहिए विश्व की साझेदारी है।

गांवों को आधार बना शहरों को पुनर्जीवित करना होगा,
इस सदी में भारत को इस क्षेत्र में विश्व नेतृत्व करना होगा।

डॉ. जय महलवाल(अनजान)
ई –०१ प्रोफेसर कॉलोनी
राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

उल्कापात कमांए

बड्डिया मेहनता ने डाल बूटे लगाए,
फेरी किस मांहनूए रिए सोचे से जलाए,
मारी ते जले पंछी पेखेरू,
तिना रे जे अजे फंग बी नी थे आए।
क्या बीती हूंगी तिना रे दिलां पर,
इने कसूते मांहनूएं तिना रे टब्बरां रे टब्बर मुकाए,
फुकी ते जंगला रे जंगल,
फेरी बोलांए आवा पर्यावरणा जो शुद्ध बनाएं।
अपने लालचा खातर करी देयें एडा नुकसान,
माल माहनू पंछी पखेरु लगीरे हूने परेशान,
जंगलां च अग लाईने,
अपने कालजे जो केड़ी
ठंड पाएँ।
मूए तुहां रे बी ए बच्चे,
कंआ तिना जो दोष लगवां ए,
कोई सीधा कम्म करी करा एड पड़ोसा च,
कजो एड़ा उल्कापात कमां ए।

युवा कवियित्री नेहा खातून
मऊ, उ. प्र.

ये बंदिशें

मैं पिंजरे का पंछी हूं मेरा आसमां नहीं कोई
बन्धा हूं मै एक बंधन में जकड़ा हूं एक उलझन में
कि इस पिंजरे के सिवा अब मेरा साथी नही कोई
अपने परों को पसारे बेपरवाह सा मै उड़ सकता
यहां वहां फुदकता मैं फड़फड़ाता अपने पंखों को
देखता आसमां से जमीं तक फैले खुबसूरत नज़ारों को
तरह -तरह के फूलों को और गुलशन को बहारों को
जाने क्या कुसूर था मेरा जो यूं क़ैद किया मुझको।
फड़फड़ाता हूं मैं पंख अपने कोशिशें भी हज़ार करता हूं
अपनी मंजिलों की जानिब जा नही पाता
बस मैं हर पल सबसे फरियाद करता हूं।
सारे हौसले भी मेरे तब टूट जाते हैं
जब धारदार अल्फाजों के तीर मुझपे बरसाये जाते हैं।
जिस जिंदगी का मैं सोच बैठा हूं है वो सिर्फ एक सपना।
कि हर तरफ से है मुझपे नजरें शहबाज़ (गरूड़) की ।
इस क़ैद ने ही तो मुझे उन नजरों से महफूज़ किया है
मैं पिंजरे का पंछी हूं मेरा आसमां नहीं कोई ।

कृतिका सिंह के कार्टून

कृतिका सिंह जी उभरती हुई कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज Kritika cartoonist (https://www.facebook.com/cartoonistkritika?mibextid=ZbWKwL) पर फॉलो भी कर सकते हैं

प्रस्तुत है कृतिका जी के जीवंत कार्टून :

वीथिका ई पत्रिका :आपसे आपकी बात

वीथिका ई पत्रिका साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान को समर्पित मासिक ई पत्रिका है. आप हमारे वेबसाइट www.vithika.org से पत्रिका डाउनलोड कर सकते हैं, व लेखों, रचनाओं पर हमें अपने विचार भी भेज सकते हैं. वीथिका ई पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखक के अपने विचार हैं, इनसे या इनके विचारों से पत्रिका या पत्रिका की सम्पादकीय समिति किसी प्रकार की सहमति नहीं रखती.

हमें अपनी रचना या लेख भेजने के लिए आप उसे हिंदी भाषा में टाइप कर हमें जीमेल या whatsapp कर सकते हैं :

Gmail : vithikaportal@gmail.com
whatsapp: 8175800809